بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ
دفتر مجلس انصاراللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA
Mob.9682536974.E-Mail :ansarullah@qadian.in Khulasa Khutba-06.10.2023 محلہ احمدیہ قادیان ۱۴۳۵۱۶ ضلع: گورداسپور (پنجاب)

बदर की लड़ाई के संदर्भ में आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पवित्र जीवन तथा ऐतिहासिक घटनाओं का ईमान वर्धक वर्णन।

सारांश ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, बयान फ़र्मूदा 6 अक्तूबर 2023, स्थान मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद यू. के.।

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللّٰہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعَالَمِیۡنَ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ۔ مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَاِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ۔ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ أَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَلَا الضَّآلِّیۡنَ۔

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि असमा की हत्या वाली घटना जो पिछले ख़ुत्बः में बयान की थी तथा मैंने कहा था कि एक दूसरी घटना भी है इसी तरह की। दूसरी घटना भी केवल एक मनघड़त कहानी लगती है। यह दूसरी घटना अबू अफ़क यहूदी के वध की है।

इसका वयाख्यान इस प्रकार किया जाता है कि एक दिन रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सहाबियों से फ़रमाया! कौन ह जो मेरे लिए इस दुष्ट अर्थात अबू अफ़क (यहूदी) ने निपट सकता है। अर्थात कौन है जो उसका काम तमाम कर सकता है? यह व्यक्ति अर्थात अबू अफ़क अत्यधि वृध आदमी था, यहाँ तक कि कहा जाता है कि एक सौ बीस वर्ष हो चुकी थी किन्तु यह लोगों का आप स. के विरुद्ध भड़काता था तथा अपने काव्य में आपके विरुद्ध अपशब्द बोलता एवं अपमान करता था। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इस निर्देश पर हज़रत सालिम बिन उमैर उठे (ये उन लोगों में से थे जो अल्लाह तआला के भय से अत्यधिक रोया करते थे, बदर के युद्ध में भी शरीक हुए) अतः उन्होंने निवेदन किया- मुझ पर नज़र अर्थात मैंने मनौती मान रखी है, कि मैं या तो अबू अफ़क की हत्या कर दूँगा अथवा इसी चेष्टा में अपने प्राण दे दूँगा। अतएव उसके बाद आप रज़ी. अवसर की तलाश में रहने लगे। एक बार जबकि रात का समय था तथा भीषण गर्मी पड़ रही थी तो अबू अफ़क अपने घर के आंगन में सोया हुआ था, आपको इसकी सूचना मिली तो तुरन्त रवाना हुए। वहाँ पहुंच कर आपने अपनी तलवार अबू अफ़क के जिगर पर रखी तथा उस पर पूरा दबाव डाल दिया, यहाँ तक कि तलवार उसके पेट में से पार होकर बिस्तर में धंस गई तथा साथ ही ख़ुदा के दुशमन अबू अफ़क ने एक भयानक चीख़ मारी। आप उसे उसी हालत में छोड़ कर वहाँ से चले

आए। उसकी चींख़ सुनकर तुरन्त ही लोग दौड़ पड़े तथा उसके कुछ साथी उसी समय उसे उठा कर मकान के अन्दर ले गए परन्तु वह ख़ुदा का दुशमन उस घोर आघात को सहन न करके मर गया।

हुज़ूरे अनवर अय्यदहुल्लाह ने इस घटना की व्याख्या करते हुए फ़रमाया- यह घटना भी किसी विश्वस्त प्रमाण के साथ उल्लिखित नहीं है, सहा सित्ता (मान्यता प्राप्त हदीस की छः पुस्तकें) में भी इसका वर्णन नहीं है। सीरत की कुछ किताबों में इसका वर्णन हुआ है, जैसा कि सीरते हलबिय्या, शरह ज़र्क़ानी, तबक़ातुल कुबरा इब्नुल असद, सीरते नबविय्या इब्ने हिश्शाम, अलबदाया वन्नहाया, किताबुल मग़ाज़ी वाक़दी तथा सुबलुल हुदा वर्रिशाद इत्यादि में। किन्तु इतिहास की अधिकांश पुस्तकों म इस घटना का उल्लेख नहीं है, उदाहरणतः अलकामिल फ़ित्तारीख़, तारीख़े तबरी, तारीख़ इब्ने ख़लदून इत्यादि।

इस घटना के विषय में भी असमा वाली घटना की भांति यह साक्ष्य बयान किया जाता है कि वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के विरोध एवं दुश्मनी में लोगों को उभारा करता था। बदर की लड़ाई के बाद यह और अधिक ईर्ष्या एवं द्वेष में बढ़ गया तथा खुल्लम खुल्ला विद्रोही हो गया था। अबू अफ़क की हत्या वाले वृत्तांत के भीतरी विरोधाभास भी इस घटना को संदिग्ध कर देते हैं। उदाहरणतः नम्बर एक यह कि हत्यारे के नाम में मतभेद- इब्ने असद एवं वाक़दी के अनुसार अबू अफ़क के हत्यारे सालिम बिन उमैर थे जबकि कुछ अन्य कथनों के अनुसार सालिम बिन उमरू का वर्णन है, जबकि इब्ने उक़बा की दृष्टि में सालिम बिन अब्दुल्लाह ने उसका वध किया। दूसरे यह कि हत्या के कारणों में मतभेद- इब्ने हिश्शाम तथा वाक़दी के अनुसार सालिम ने स्वयं जोश में आकर उसका वध किया जबकि कुछ रिवायतों के अनुसार रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आदेशानुसार उसकी हत्या की गई। धर्म के मतभेद क बारे में एक तीसरी बात है- इब्ने सअद की दृष्टि में अबू अफ़क यहूदी था, जबकि वाक़दी की दृष्टि में वह यहूदी नहीं था। फिर हत्या के ज़माने में भी मतभेद है- वाक़दी तथा इब्ने सअद के अनुसार यह घटना असमा पुत्री मर्वान की हत्या के बाद की है, जबकि इब्ने इसहाक़ तथा इब्ने हिश्शाम इत्यादि के अनुसार यह घटना असमा के वध से पहले की है। इन स्पष्ट विरोधाभास से भी ज्ञात होता है कि यह केवल बनावटी एवं झूठी घटना है, इसकी कोई वास्तविकता नहीं।

यद्यपि यह असम्भ है किन्तु यदि मान भी लिया जाए तो उसके अन्य अपराध, देश के मुख्या की हत्या पर उकसाना, व्यंगात्मक काव्य के द्वारा युद्ध पर उभारना, सार्वजनिक शांति को भंग करना तथा युद्ध की आग भड़काना ही मृत्यु दंड क लिए पर्याप्त हैं जिन पर आजकल भी मृत्यु दंड दिया जाता है। जब शासन के विरुद्ध देश द्रोह साबित हो जाए, केवल गालियाँ देना इस हत्या का कारण नहीं हो सकता। इसी प्रकार असमा की घटना के समान यहाँ भी अबू अफ़क की हत्या के पश्चात यहूदियों की कोई प्रतिक्रिया साबित नहीं है। अतएव उनका चुप रहना इस घटना के बनावटी होने का पक्का प्रमाण है।

यह बात भी याद रखने योग्य है कि इन घटनाओं का ज़माना बदर के युद्ध से पहले अथवा तुरन्त बाद का बयान किया जाता है तथा सभी इतिहासकार सहमत हैं कि मुसलमानों तथा यहूदियों की पहली दुश्मनी बनू क़नक़ाअ नामक कबोल क साथ लड़ाई है। यदि बदर के युद्ध से पहले भी कोई घटना होती तो

वे उसके अंतगर्त उसका अवश्य वर्णन करते तथा यहूदी अबू अफ़क और असमा की हत्याआं के कारण आपत्ति का आचत्य रखते थे कि मुसलमानों ने छेड़ छोड़ शुरु करने में पहल की, परन्तु किसी इतिहास में यहाँ तक कि स्वयं उन इतिहासकारों की पुस्तकों में भी जिन्होंने ये घटनाएँ लिखी हैं, कदापि यह वर्णन नहीं आता कि मदीना के यहूदियों ने इन घटनाओं को लेकर कभी कोई ऐसा सवाल उठाया हो अथवा इन घटनाओं के सम्बंध में शार मचाया किया हो। यदि किसी व्यक्ति में यह विचार पैदा हो कि सम्भवतः उन्होंने आपत्ति की हो परन्तु मुसलमान इतिहासकारों ने उसका वर्णन न किया हो तो यह एक अनुचित एवं आधारहीन विचार होगा, क्यूँकि कभी किसी मुसलमान इतिहासकार अथवा हदीसविद ने विरोधियों के किसी आरोप पर पर्दा नहीं डाला, अतः उदाहरणतः जब सिर्या नख़ला (मुसलमाना तथा काफिरां को एक झडप) वाले वृत्तांत में मक्का के मुशरिकों ने मुसलमानों के विरुद्ध अवैध महीनों क अनादर का आरोप लगाया तो मुसलमान इतिहासकारों ने पूरी ईमानदारी से उनके आरोप को अपनी किताबों में लिख दिया। अतः यदि उस अवसर पर भी यहूदियों की ओर से कोई आपत्ति हुई होती तो इतिहास उसके वर्णन से वंचित न रहता। अभिप्रायः यह है कि जिस दृष्टिकोण से भी देखा जावे ये घटनाएँ सही साबित नहीं होतीं तथा ऐसा लगता है कि या तो किसी गुप्त दुशमन ने किसी मुसलमान का नाम लेकर ये घटनाएँ बयान कर दी हैं तथा फिर वे मुसलमानों की रिवायतों में सम्मिलित हो गइं, और या किसी कमज़ोर मुसलमान ने अपने क़बीले की ओर यह झठा गर्व सम्बंधित किया हा कि इससे सम्बंध रखन वाले आदमियों ने दष्ट काफ़िरों का वध किया था, ये रिवायतें इतिहास में दाख़िल कर दी हैं, वल्लाहु आलमु।

हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब ने असमा और अबू अफ़क की हत्या की झूठी घटनाओं का वर्णन करत हुए सीरत ख़ातमुन्नबिय्यीन में बयान फ़रमाया है कि बदर के युद्ध की घटनाओं के बाद वाक़दी तथा कुछ अन्य इतिहासकारों ने दो ऐसी घटनाओं का लेख किया है जिनका हदीस की किताबों तथा प्रमाणित इतिहास एवं रिवायतों में निशान नहीं मिलता तथा घटनाक्रम पर भी यदि विचार किया जाए तो वे उचित साबित नहीं होत, किन्तु चूँकि उनसे आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के विरुद्ध एक प्रत्यक्ष कारण आपत्ति करने का उत्पन्न हो जाता है इस लिए कुछ ईसाई इतिहासकारा ने अत्यंत अप्रिय अवस्था क रूप मं इनका वणंन अपनो पुस्तकां मं किया है परन्तु वास्तविकता यह है कि आलोचनात्मक परोक्षण के सामने ये घटनाएँ सार्थक साबित नहीं होतीं।

पहला प्रमाण जो इनके विषय वस्तु के सम्बंध में शंका पैदा करता है, यह है कि हदीस की किताबों में इन घटनाओं का वर्णन नहीं पाया जाता, बल्कि हदीस तो अलग रही कुछ इतिहासकारों ने भी इनका वर्णन नहीं किया। यद्यपि यदि इस प्रकार के वृत्तांत वास्तव में होते तो कोई कारण नहीं था कि हदीस तथा कुछ इतिहास की पुस्तकें इनके वर्णन से वंचित होतीं। इस जगह यह सन्देह नहीं किया जा सकता कि चूँकि इन घटनाओं से प्रत्यक्षतः आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और आपके सहाबियों के विरुद्ध एक प्रकार की आपत्ति पैदा होती थी इस लिए हदीस विदों तथा इतिहासकारों ने इनका वर्णन करना छोड़ दिया होगा। क्यूँकि पहली बात तो यह है कि ये घटनाएँ उन परिस्थितियों को सम्मुख रखते हुए, जिनमें वे घटित हुइ,

आपत्ति योग्य नहीं हैं। दूसरे जो व्यक्ति हदीस एवं इतिहास का थोड़ा सा भी ज्ञान रखता है उससे यह बात छिपी नहीं हो सकती कि मुसलमान हदीसविदों तथा इतिहासकारों न कभी किसी घटना के वर्णन को केवल इस कारण से नहीं छोड़ा कि उससे इस्लाम तथा इस्लाम के संस्थापक पर प्रत्यक्षतः आपत्ति होती है। जिसका कारण यह है कि उनको स्वोकति पाप्त सवमान्य रीति यह थी कि जिस बात को भी वे रिवायतों की दृष्टि के अनुसार सही पाते थे, उसका वर्णन करने में वे उसके विषय के कारण कदाचित कोई संकाच नहीं करते थे। मशतशरिक लखक मिस्टर मार्गोलीस जैसा व्यक्ति भी जो सामान्यतः हर बात में विरोधी दृष्टिकोण रखता है, इन घटनाओं के कारण मुसलमानों को निंदनीय नहीं कहता।

हुज़ूरे अनवर अय्यदहुल्लाह ने फ़रमाया- ये सब मनघड़त बातें हैं जो आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सम्बद्ध की गई हैं। इन इतिहासकारों ने तो जो लिखा, बाद में चाहिए तो यह था कि उसका उचित रूप में निरीक्षण किया जाता। यह अल्लाह तआला का शुक्र एवं उपकार है कि हमें उसने ज़माने के इमाम अलैहिस्सलाम को मानने का सामर्थ्य प्रदान किया तथा हर बात को हम देख कर, परख कर तथा उसकी वास्तविकता को समझ कर फिर बयान करने की चेष्टा करते हैं तथा कोई भी आरोप जो इस तरह का है, जो आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ात पर आता हो उसका खंडन करने का प्रयास करते हैं। अल्लाह तआला उन आलिमों को भी बुद्धि दे जो ऐसी बातों का चलन करके केवल अपने स्वार्थ का लाभ उठाते हैं तथा इस्लाम को बदनाम करने की कोशिश कर रहे हैं। कहने को तो एक ओर इस्लाम की सेवा कर रहे हैं किन्तु वास्तव में उनके कर्म ही हैं जिन्होंने उनमें कट्टरवाद पैदा कर दिया है, अल्लाह तआला इनको भी बुद्धि प्रदान करे।

हुज़ूर-ए-अनवर ने अन्त में प्रोफैसर डाक्टर नासिर अहमद ख़ान साहब ऑफ़ कैनेडा, मुकर्रम शरीफ़ अहमद भट्टी साहब ऑफ़ रबवा, प्रोफैसर अब्दुल क़ादिर डाहरी साहब पूर्व अमीर जाअत ज़िला नवाब शाह तथा प्रोफैसर डाक्टर मुहम्मद शरीफ़ ख़ान साहब ऑफ़ अमरीका के निधन पर उनका सद्वर्णन तथा जमाअती सेवाओं का वर्णन फ़रमाया तथा जुम्अः की नमाज़ के बाद उनके जनाज़े की नमाज़ ग़ायब पढ़ाने की घोषणा भी फ़रमाई।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, समपर्क करें-9781831652

टोल फ्री सम्पर्क अहमदिया मुस्लिम जमाअत क़ादियान-18001032131